४१ एकधन

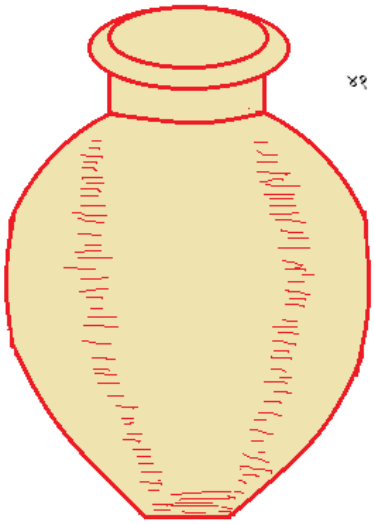

४१ **एकधन**- यज्ञोपयोगी पानी से भरा हुआ मिट्टी का घड़ा एकधन है। ''प्रत्यगेकधनान्'' का.श्रौ.सू.- 9/2/22

४२ परीशास

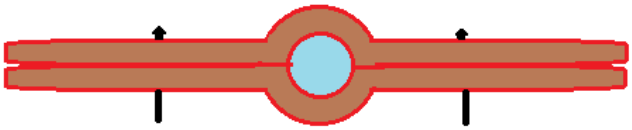

४२ **परीशास**- महावीर पात्र को अग्नि पर से पकड़कर उठाने के लिए यह एक यज्ञकाष्ठ का सन्दंश है। ''परीशासावादत्ते । का.श्रौ.सू.- 26/5/12

४३ घन

४३ **घन**- यह काष्ठ के दण्ड वाला लोहे का बना होता है। भूमि में मसूख या स्थूणा गाड़ने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। ''स्थूणां गोबन्धनार्थं निखनति।'' दे.या.प.-पृष्ठ 265

४४ परशु

(१)

(२)

४४ **परशु**- यज्ञकार्य के निमित्त दर्भ अथवा समित् को काटने का शस्त्र परशु है। ''पलाशशाखां छिनत्ति'' **दे.या.प.-पृष्ठ ७६**

४५ दर्वि

४५ **दर्वि**- दृणाति विदारयति येन स दर्विः। यह विकंकत काष्ठ की बनी कलछुल के आकार की होती है। चातुर्मास्य याग में इसी से हविर्द्रव्य की आहुति दी जाती है। ''दर्व्यादत्ते'' का.श्रौ.सू.-5/6/30, का.स्मृति- 15/15

४६ चरुपात्र

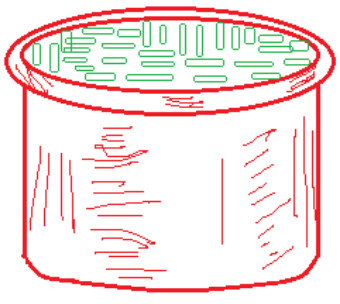

४६ **चरुपात्र**- जिस पात्र में देवता विशेष हेतु निर्दिष्ट हविर्द्रव्य ओदनादि को गार्हपत्य पर रखकर पकाया जाता है, उसे चरुपात्र कहते हैं। इसका मुँह चौड़ा, पेंदी गोल एवं आकार पतीला जैसा होता है।